# PHILOSOPHY

Hons. - Paper-III (Part-II)

## Hedonism (कठोरतावाद)

Dr. S.K. Singh
Mob-9431449951

→ कांट ने किसी कर्म का नैतिक गुण या मूल्य उस कर्म में ही अन्तर्भूत बताया है। कर्म के परिणाम पर उसका मूल्य निर्भर नहीं रहता।

→ नैतिक नियमों का ज्ञान व्यक्ति को व्यावहारिक बुद्धि (Practical reason) के द्वारा होता है। व्यावहारिक बुद्धि के द्वारा नैतिक नियमों का सहज बोध हो जाता है। अतः आचरण संबंधी कोई भी निर्देश व्यावहारिक बुद्धि ही दे सकती है।

→ मनुष्य में दो तत्त्व हैं — विवेक (Reason) और भावनाएं (Sensibility)। इच्छा, काम, क्रोध आदि भावनाओं के ही रूप हैं। परन्तु बुद्धि या विवेक के कारण ही मनुष्य अन्य पशुओं से उच्च समझा जाता है। अतः हमें भावनाओं पर पूर्ण नियंत्रण करके बुद्धि के अनुसार आचरण करना चाहिये क्योंकि बुद्धि ही नैतिक शक्ति है, जिसमें हमें किसी कर्म के औचित्य और अनौचित्य का बोध होता है।

→ हमें अपनी इच्छाओं, वासनाओं एवं संवेगों को सदैव दबाकर रखना चाहिये क्योंकि इनसे प्रेरित कर्म नैतिक-गुणरहित होते हैं। इसी कारण कांट के मत को कठोरतावाद (rigorism) कहा जाता है।

→ कांट के अनुसार नैतिक गुण आत्मगत (Subjective) न होकर वस्तुगत (objective) हैं। कोई कर्म उचित या अनुचित इसलिये नहीं कहा जा सकता कि इससे व्यक्ति को सुखात्मक या दुखात्मक अनुभूति होती है। कोई कर्म नैतिक इसलिये है कि उसमें नैतिक गुण विद्यमान है। कर्त्ता पर ये नैतिक गुण निर्भर नहीं है।

→ नैतिक गुण अनुभवजन्य (empirical) नहीं है। कांट के अनुसार नैतिक नियम बुद्धि के आदेश हैं। बुद्धि सभी मनुष्यों में सामान्य (Universal) है। इसलिये ये नियम भी सामान्य हैं।

→ नैतिक नियम अनुभवनिरपेक्ष (a-priori) हैं। ये सनातन एवं सार्वरूप कहे जाते हैं। कांट का विचार है कि "दो ही वस्तुएं हममें भय उत्पन्न कर देती हैं; ऊपर आसमान के तारे और अन्दर नैतिक नियम, क्योंकि दोनों ही समान रूप से व्याप्त हैं।"

→ कांट 'कर्तव्य कर्तव्य के लिये' (duty for duty sake) का उपदेश देते हैं। इसमें कोई कर्म इसलिये नहीं करना चाहिये कि उससे हमें सुख मिलता है बल्कि कर्म को कर्तव्य (duty) समझकर करना चाहिये।

→ "जिस प्रकार सुखवाद (hedonism) 'सुख सुख के लिये' (Pleasure for ~~pleasure~~ pleasure's sake) का सिद्धांत है, उसी प्रकार कांट का बुद्धिवाद 'कर्तव्य कर्तव्य के लिये' का सिद्धांत है।"

→ नैतिक नियम निरपेक्ष आदेश (categorical imperative) है। इन नियमों का पालन बिना किसी शर्त के होना चाहिये। कांट का मत है कि व्यावहारिक बुद्धि (Practical reason) अथवा अन्तःकरण पर या अपने-आप, बिना किसी फल की आशा किये, लागू किये जाने वाले नैतिक नियम ही निरपेक्ष आदेश है।

→ इस प्रकार कांट का नैतिक नियम वैसा नियम है जिसका निर्माता व्यावहारिक बुद्धि या अन्तःकरण है तथा इसका अनुभव से कुछ भी संबंध नहीं होता है, बल्कि ये नियम प्रागनुभविक (a-priori) होते हैं। चूंकि मनुष्य विवेकशील प्राणी है, विवेकशीलता ही उसका विशेष्ट गुण है जो उसे अन्य जीवों से अलग करता है, इसलिये भावनात्मक पक्ष विवेक अर्थात् व्यावहारिक बुद्धि के नियंत्रण में होना चाहिये तथा व्यक्ति को नैतिक कहा जायेगा। संभवतः यही कारण है कि उनके ~~नीति~~ नैतिक विचार को बुद्धिवाद कहा जाता है। द्वितीयतः, वे नैतिकता के लिये नैतिक नियमों का कठोरता से ~~पालन~~ बिना किसी अपवाद के पालन करने पर जोर देते हैं अतः इसे कठोरतावाद कहा जाता है और तृतीयतः इसे कुछ समीक्षक नैतिक शुद्धतावाद भी कहते हैं क्योंकि इसमें फल या परिणाम के लिये कोई स्थान नहीं है।

Scanned with CamScanner